<u> የውው ተቀቀቀ ተቀቀቀ ተቀቀቀ ተቀቀቀ</u>

श्रीहरिः

श्रीमन्महर्षि वेद्व्यासप्रणीत

## महाभारत 📉 🛴

( तृतीय खण्ड ) 🚜 🦠

[ उद्योगपर्व और भीष्मपर्व ]

( सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित )

3 of 6



भारता है। भारतार्

यत्वादक-

पण्डित रामनारायणद्त्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

सम्बद्धा	वियम	<del>चृह-संस्</del> या	क्ष्याव	भिषय	इड-संख्या
	( सेनोचोगपर्व )			स्वर्गमें जाकर अपने राज्यक	
	वेसटकी सभामें भगवान श्री		करनाः	शस्यका युधिव्रिस्को आश्वा	हन देना
2 Trickers	404	111 Dalle		से विदा लेकर दुर्योभनके या	
₹-चलगमज	किर भाषण 💝	*** 5085		और दुर्योधनके वहाँ सहायत	
३-सात्वकिव	हे <b>बीरोचित उद्गार</b> "	SoA4	आयी ह	ई रोनाऑका संक्षित विवरण	£206
४-राजा हुए	विका भाषण (***) हे बीरोचित उद्गार (*** हक्की सम्मति (***	*** 2084	-	( संजययानपर्व )	
५-भगवान्	श्रीकृष्णका द्वारकश्यमनः विर	हट और	२०-इपदके	पुरोहितका कौरवसभासे भाग	ज ··· २०८६
हुपदके स	वंदेशसे राज्यओंका पाण्डवपक्षकी	ओरसे		द्वारा हुपदके पुरोहितकी	
सुद्धके ।	लेये आगमन 😁	50xa		करते हुए अर्जुनकी प्रशंध	
६-द्रुपदका	पुरोहितको दौत्यकमंके लिये	अनुमति		रिद्ध कर्णके आक्षेपपूर्ण वन	
	। पुरोहितका हस्तिनापुरको प्रस				
	का दुर्योधन तया अर्जुन			(रा भीध्यकी बातका समर्थ	
	देना ***			को सम्मानित करके विदा कर	
	दुर्योधनके सत्कारते प्रसन हो			ह्य संजयसे पाण्डवीके प्रभाषः	
	और युधिष्ठिरमे मिलकर			रते हुए उसे संदेश देकर प	
	न देना ः		पास मंज	ना ''' युधिष्टिरसे मिलकर उनक	2003
	ारा विशियका वर्षः <b>श</b> वासुरकी			एवं सुभिष्ठिरका संज्ञयसे की	
उसक	लाय रन्द्रका युद्ध तथा देव	वाआका	कुशल-स	माचार पूछते हुए उससे र रमा	ग्रेरगभित
र वन्तर त्यस्ति	त देवताओंका भगवाम् विष्णुकी	इस्सार्थे	अश्य क	रना युभिष्ठिरको जनके प्रदर्नीका उ	२०९४
	रि हन्द्रका उनके आज्ञानुसार इ			हैं राजा चृतराष्ट्रका संदेश	
	रके अयसर पाकर उसे आर			हरना श्रीपट्टमा अर्थ	
	कि भयसे जलमें छिपना		अस्तिका न २५मंत्रक्रका	व्यविधिरको भृतराष्ट्रका संदेश	१०५७
	ों तथा सृषियोंके अनुरोध			जी <b>औरसे</b> भी शान्तिके लिं	
संबंधान	इन्द्रके पद्पर अभिविक्त ह	तेम वर्ष	करना	and and an emission to	2096 2096
	गर्मे आसक होना और चिन्त			का संजयको इन्द्रप्रस्थ छोट	
	द्रामीको बृहस्पतिका आश्रासः			ोना सम्भव बतलाना	
	हुप-संवादः बृहस्यतिके द्वारा इ			युधिष्ठिरको युद्धमें दोपका स	
	तथा इन्द्राणीका नहुपके पा			र उन्हें युद्धशे उपरत करने	
Married	अवधि माँगनेके लिये जाना	A So	करना	* * *	5505
				युधिष्ठिरका उत्तर	340€
	इन्द्राणीको कुछ कालको अव			यातीका प्रत्युक्त देते हुए अ	
क् <b>र</b> कर कर	ब्रह्महत्याचे उदार तथा :	श्चाह्मस्य		राष्ट्रके लिये चेतावनी देना	
धागद्व	कि। उपासनाः देवीकी सहात्रतासे इन्द्राणीव	\$605		विदाई तथा युधिष्टिरका संदे	
	द्वातक एक्त्रप्राप्त हेन्द्रश्याव	ा इन्द्रवा *** २०७३		का मुख्य-मुख्य कुरुवंशियं	
	आज्ञाचे इन्द्रागीके अनुरोधपर		संदेश	- A-32 C2 -2-	5550
	को अथना बाहन बनान	-		रा कौरपींके सिये संदेव	
	का असमा सहित जनात कोर अभिका संवाद			इस्तिनापुर का भृतराष्ट्रसे (धिष्ठिरका कुशल-समाचार	
				विश्वास्का कुशल्यसम्बाद के कार्यकी निन्दा करना	
	दास अप्रिभीर रन्द्रका स		र्यसङ्ग		4144
	एवं खेकपालीकी इन्द्रसे वात		3 h williams	( प्रजागरपर्व )	
The second second	विका र्न्ट्रवे नहुपके पत्नका		३ १- शृतराष्ट्र		*** \$189
् ् बताना		-00 3060	२४-धृतराष्ट्र	के प्रति विदुरतीके नीतियुक्त व	त्वन *** रहर्ष

१५-विदुरके द्वारा केशिनीके लिये मुधन्याके साथ	५९-संजयद्वारा अर्जुन्के ध्वज एकं अर्थोका तथा
विरोचनके विवादका क्र्यन करते हुए	युधिन्निर आदिके पोक्षोका वर्णन "" २२२७
भृतराष्ट्रको धर्मायदेश *** २१४२	५७ संजयद्वारा पाण्डवीकी युद्धविषयक तैयारीका
१६-दत्तात्रेय और साध्य देवताओंके संवादका	वर्णनः धृतराष्ट्रका विलापः दुर्योधनदारा
उल्लेख करके महाकुछीन लोगींका संक्षण	अपनी प्रयलताका प्रतिपादनः धृतराष्ट्रका
क्तलाते हुए विदुरका भृतराष्ट्रको समझाना *** २१४८	उसपर अविश्वास तथा संजयद्वारा भृष्टगुसूसी
३७-धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीका हितोपदेश " २१५४	शक्ति एवं संदेशका कथन "" २२१९
३८-विदुरजीका नीतियुक्त उपदेश " २१६०	५८-भृतराष्ट्रका दुर्योधनको संभिन्ने किने
१९-भृतराष्ट्रके अति विदुरजीका नीतियुक्त उपदेश २१६३	समझानाः दुर्योधनका अईकारपूर्वक पाण्डनी-
Yo-भर्मकी सहत्ताका प्रतिपादन तथा बाझण आदि	से युद्ध करनेका ही निश्चय तथा भृतराष्ट्रका
चारों क्योंके धर्मका छंश्चित वर्णन ''' ११६९	अन्य योदाओंको युद्धते भव दिलाना "" ११३१
(समत्सुजातपर्यं)	५९-संज्यका भूतराष्ट्रके पूछनेपर उन्हें अक्तिभ्य
४१-विद्रश्रीके द्वारा स्मरण करनेपर आये हुए	और अर्जुनके अन्तःपुरमें को हुए संदेश
सनत्सुजात ऋषिषे धृतराष्ट्रकी उपदेश देनेके	सुनानः *** स्२३६
लिये उनकी प्रार्थना "" २१७२	६०-पृतराष्ट्रके द्वारा कीरव-सण्डनीकी शक्तिका
४२-सनत्सुआतजीके द्वारा धृतराष्ट्रके विविध प्रधनी- का उत्तर	तुलनात्मक वर्णन ''' २२३८ ६१-दुर्योधनद्वारा आत्मप्रशंसा ''' २२४०
का उत्तर् ''' २१७३	
¥र्-बद्धशनमें उपयोगी मौतः तपः त्यागः अप्रमाद	६२-कर्वकी आत्मप्रशंसाः भीष्मके द्वारा अस्पर
एवं दम आदिके व्याप सवा मदादि दोगीका	आक्षेपः कर्णका सभा त्यागकर वरना और
निक्पण " ११७८ ४४-महाचर्य तथा महाका निक्पण " ११८३	बहुना असक प्रात पुनर आसम्बुक्त सकत
४५-गुण-दोवोंके कक्षणींका वर्गन और अक्षयिधाका	भीभ्यका उसके प्रति पुनः आखेष्युक्त क्वन कहना ६३-दुर्वोधनद्वारा अपने पक्षकी प्रवस्ताका क्वन
प्रतिपादन "" १९८६	करना और विदुरका दमकी महिमा क्लाना २२४४
४६-परमात्माके खरूपका वर्णन और योगीजनोंके	६४-विवुरका कौदुम्बिक कल्रहते हानि बताते हुए
द्वारा उनके साक्षात्करका प्रतिपादन ''' २१८८	भृतराह्रको संभिद्धी सलाह देना *** २१४६
( यानसंधिपर्य )	६५-भृतराष्ट्रका दुर्योभनको समझाना " १२४८
Yu-पाण्डवीके महाँसे छीटे हुए संजयका कौरव-	६६-संजयका पृतराष्ट्रको अर्जुनका संदेश सुनाना २२५०
सभामें आगमन	६७-वृतसङ्के पास न्यास और गान्धारीका
¥८—संजयका कौरवसभामें अर्थुनका संदेश सुनाना २१९४	आगमन तथा व्यासजीका संजयको अधिकृष्य
४९-भीपमका दुर्योधनको संधिके लिये समकाते	और अर्श्वनके सम्बन्धमें कुछ कहनेका आदेश ११५।
हुए अक्रिप्त और अर्थुनकी महिमा बताना	
एवं कर्णपर आश्चेप करनाः कर्णकी आत्म-	६८-संजयका पृतराष्ट्रको भगवान् अक्तिष्णकी महिमा बतलाना "" १२५६
प्रशंकाः भीष्मके द्वारा उसका पुनः उपहास	६९-संजरका धृतराष्ट्रको श्रीकृष्ण-प्राप्ति एवं
एवं द्रोणाचार्यहारा भीष्मजीके कथनका अनुमोदन	तत्त्वज्ञानका साधन यताना ""
अनुमोदन *** २२०६	७०-भगवान् श्रीकृण्यके विभिन नामोकी
५०-संजयद्वारा युधिष्टिरके प्रधान सहायकीका वर्णन २२१०	ब्युत्पतियोंका कथन १२५५
५१-भीमसेनके पराक्रमसे वरे हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१४	७१-शृतसङ्के द्वारा भगवद् गुणगान "" २२५७
५२-धृतराष्ट्रद्वारा अर्जुनसे प्राप्त होनेवाले अयका	( भगवचानपर्व )
वर्णन " २२१८ ५३-कौरवसभामें धृतराष्ट्रका सुदसे भय दिखाकर	७२-बुधिष्ठिरका श्रीकृष्णचे अपना अभियाव
ह्यान्तिके छिये प्रसाय करना "" २११०	निषेदन करनाः भीकृष्णका शास्तिवृत वनकर
५४-हंतपका भृतराहको उनके शेष धताते हुए	कीरवस्थामं जानेके किये उद्यस होना और
दुर्वोधनगर शासन करनेकी सलाइ देना *** २२२१	इस निपयमें उन दोनोंका वार्तास्वप "" २२५८
५५-भृतराष्ट्रको चैर्य देवे हुए दुर्योधनद्वारा अपने	७३-बीकृष्णका युधिष्ठिरको बुदके लिये
उत्कर्ष और पाण्डबोंके अपकर्षका वर्णन " २२१३	प्रोस्ताइन देना *** ***

	७४-भी <del>यदेनका शान्तिवि</del> षयक प्रस्ताव	2796	९५-कौरवतभामें श्रीकृष्यका प्रभावकाली भागन	2155
	<b>७५-श्रीकृष्णका भीमसेनको उत्तेजित करना</b> ***	2200	९६-परगुरामजीका दग्भोज्ञमकी कथाहारा नर-	
	<b>७६</b> -भीवनेनका उत्तर '''	१२७२	नाशयणसास्य अर्जुन और अङ्गिष्णका	
	७७ अफ़ुष्यका भीमरेनको आधारन देना ""	\$655	सहस्य वर्णन करना ***	\$988
		<b>२२७५</b>	९७-कम्म मुनिका दुर्योधनको संधिके लिये समझाते	
		२२७६	हुए मातलिका उपास्त्रान आरम्भ करना ***	8958
		2202	९८-मातलिका अपनी पुत्रीके छिपे कर खोजनेके	
	८१-बुदके लिये सहदेव तथा सात्यकिकी सम्मति		निमित्त नारहवीके साथ सक्ष्मलोकमें समान	
	भीर समक्ष योद्धाओंका समर्थन		करते हुए अनेक आधर्यजनक बस्तुएँ देखना	5556
	८१-प्रीपरीका बीक्रणने अपना दुःस सुनाना		९९-न्तरदर्जीके द्वारा पातालखोकका मदर्शन ***	
	और श्रीकृष्णका उसे आस्वासन देना		१००-दिरम्पपुरका दिग्दर्शन और वर्णन	
			१०१-अध्वत्लेक तथा गरुवकी संतानीका वर्णन	
	८१-अक्रिप्पका इस्तिनापुरको प्रस्रानः युभिष्ठिर-		१०२-सुरभि और उसकी संतानोंके साम रसातवके	
	का मासा कुन्ती एवं कीरवींके किये संदेश तथा		युक्तकां वर्णन	
	श्रीकृष्णको मार्गमे दिव्य सहर्पियोका दर्शन	4464	१०३ नागसेकके नागोंका वर्षन और मातस्थित	
	८४-मार्गके शुभाञ्चभ शकुर्तीका वर्णन तथा		नागकुमार समुखने जाय अपनी कन्याको	
	मार्गेमें छोगोंद्वारा सत्कार पते हुए औक्तवा-		व्याङ्गिका निर्माय """ ""	
	का कुकसाल पहुँचकर वहाँ विश्राम करना	रर८९		
	८५-दुर्वोधनका पृतराष्ट्र आदिकी अञ्चमतिसे		१०४-नारदजीका नागराज आर्थकके सम्मुख सुमुखके	
	श्रीकृष्णके स्वागत-सत्कारके हिन्ये मार्गर्मे		साथ मातलिकी कन्दाके विवाहका प्रकाप	
	क्षिभाम-स्वान बनवाना ***		एवं मातकिका नारवजीः सुमुख एवं आर्यकः	
	८६-श्रतराष्ट्रका भगवान् आकृष्णकी अगवानी		के साथ इन्प्रके पाल माकर उनके द्वारा	
	करके उन्हें भेंट देने एवं हु:शासनके महतमें	2222	वृत्रकको दीर्भाषु प्रदान कराना तथा वृत्रक	
	ठहरानेका विचार प्रकट करना	6424	गुणकेशी-विवाद	
	८७ मिदुरका पृतराष्ट्रको भीकृष्णकी भाकाका परस्क करनेके लिये समझाना	2204	१०५-अगमान् विष्णुके द्वारा शक्यका वर्षभञ्जन	-
	८८-दुर्बोधनका श्रीकृष्णके विषयमें अपने विचार		तथा दुर्योभनद्वारा कष्वसुनिके उपदेशकी	
	कहना एवं उसकी कुमन्त्रणाचे कुपित हो		अवोद्धना	5380
	भीष्मजीका सभारे उठ वाना ***	2254	१०६ नारदर्जका दुर्योधनको समझासे हुए धर्मराजके द्वारा विश्वामित्रजीकी परीक्षा तथा	
	८९-बीकुप्यका स्वागतः भूतराष्ट्र तथा विदुरके	_		
	८९-श्रीकृष्यका स्वागतः पूत्रपष्ट् तथा विदुर्के वर्षेत्र उनका आतिष्य	4850	गासम्बद्धे विश्वामित्रचे सुध्दक्षिणा माँगनेके स्थि हरका वर्णन	
	९०-मीक्रम्बका कुन्तीके समीप जाना एवं			44A4
	अधिकरका कुछल-समान्तर प्रकार अपने		१०७-गासवकी चिन्ता और सददका आकर उन्हें आश्वासन देना	2544
	ु दुःखींका सरण करके विलाग करती हुई		१०८-गरहका गालवते पूर्व दिशाका वर्णन करना	7407
	कुन्तीको साधासन देना	5300	१०९-दक्षिण दिशाका बर्णन	SKE
	११-श्रीकृष्णका दुर्योधनके धर जाना एवं उसके		११०-पश्चिम दिशाका वर्गन	3376
	नियन्त्रणको अस्तीकार करके विदुरजीके		१११-उत्तर दिशाका वर्णन	2342
	धरपर भोजन करना ९९-विदुरजीका श्रुतराष्ट्रपुत्रोंकी दुर्भावना वसाकर	5500	११२-गब्दकी पीठपर बैठकर पूर्व दिखाकी ओर	
	श्रीकृष्णको उनके कीरवस्थामें जानेका		जाते हुए गालवका उनके बेगसे ब्याकुछ होना	2343
	अनौचित्य बतलाना	2320	११३-ऋषभ वर्षतके शिलरभर सङ्घि गालव और	****
-	९१-श्रीकृष्णका कीरव-सण्यवीमें संधिरयापनके	111.	गरुक्षी तपस्त्रिनी शाण्डिलीसे भेंट सधा	
	प्रयत्नका भौजित्व बताना	9988	गवद और भाक्षका गुबदक्षिणा जुकानेके	
1	९४-दुर्वोधन एवं सकुनिके द्वारा हुलाये जानेपर		विचयमें परस्पर विचार	RELY
	अभवान् अक्तिकाका स्थपर बैठकर प्रस्तान		१९४-राबाई आर गरकाका राजा बनातिक वहाँ	, , , ,
	एवं भीरक्सभामें प्रवेश और स्वागतके		जाकर गुकको देनेके लिये रवाभक्षण भोड़ोंकी	
0,1	पैभात् जासनग्रह्ण ***	<b>4155</b>	याचना करना	२३५६

११६—राजा ययातिका गालवको अपनी कन्या देना और गालवका उत्ते लेकर अयोध्या-नरेशके		१३०-दुर्योधनके पहरानका सारप्रकडारा संदाक फोड़ः भीकृणाकी सिंहगर्जना तथा शृतसङ्	
यहाँ जाना ""		और विदुरका दुर्योधनको पुनः समझाना	2465
११६-एर्यश्वका दो सी श्यामकर्ण घोड़े देकर ययाति- कन्याके समेरी वसुमना तामक पुत्र उत्पन्न		१३१-भगवान् श्रीकृष्णका विश्वस्य दर्शन कराकर कौरवसभासे प्रस्थान १३२-श्रीकृष्णके पूछनेपर कुन्तीका उन्हें पाण्डवीसे	2252
करना और गालवका इस कन्याके साथ बहाँसे प्रस्थान	2364	कहनेके लिये संदेश देना	
११७-दिचोदासका स्यातिकन्या माधवीके गर्भते अवर्दन नामक पुत्र उत्पन्न करना		१२३-कुर्ताके द्वारा विदुलोगाल्यानका आरम्भः विदुलाका रणभूमिते भागकर आवे हुए	
११८-उद्योनरका ययातिकन्या माधवीके गर्भने विति नामक पुत्र उत्पन्न फरना। गाळवका		अपने पुत्रको कही प्रटकार देकर पुनः युद्धको लिये उलाहित करना ११४-पिदुलाका अपने पुत्रको सुद्धको लिये उलाहित करना १३५-बिदुला और उसके पुत्रका क्याद - बिदुलाके	२३९८
उस कन्याको साथ लेकर जाना और मार्गमें		उल्लाहित करना	<b>?Y+?</b>
गबहुका दर्शन करना '''		र १५-विद्धा भार अनक पुत्रका क्याद-विद्धाल	
११९—गाल्यका छः सौ घोड्रोंके साथ माथवीको विश्वामित्रजीकी सेवामें देना और उनके द्वारा		द्वारा कार्यमें नफलता प्राप्त कर <b>ने तका</b> रामुवशीकरणके उपार्थोका निर्देश ***	
उसके गमले अष्टक नामक पुत्रकी उत्पत्ति		१३६-विदुष्टाके उपदेशने उसके पुत्रका बुद्धके	
होनेके बाद उस कन्याको यवातिके वहाँ		लिये उद्यत होना १३७-कुन्तीका पाण्डबीके लिये बंदेश देना और	Revs
वौद्य देन।	3388		
१२०—माभवीका बनमें जाकर तथ करना तथा ययातिका स्वर्गमें जाकर मुख्यभोगके पश्चात्		भीकृष्णका उनसे विदा छेकर उपन्छव नगरमें जाना	2445
मोहबा तेजोहीन होना '''		१३८-भीध्य और होणका दुर्योधनको तमसाना	224£
१२१-म्यातिका स्वर्गलोकसे पतन और उनके	1441	१३९-भीष्मते पार्ताकाप आरम्भ करके द्रोणाचार्यका	
दौहित्रों। पुत्री सया गासव मुनिका उन्हें		दुर्योधनको पुनः संधिके लिने समज्ञाना 😬	
पुनः स्वर्गलोकमें पहुँन्वानेके खिये अपना-		१४०-भगवान् श्रीकृष्णका कर्णको पाण्डवपक्षमें	
अपना पुच्य देनेके लिये उद्यत होना	2366	भा जानेके लिये समझाना	5860
१२२ जलक् एवं दौहित्रोंके पुण्यदानसे वयातिका	111	१४१-कर्णका दुर्योधनके पक्षमें सहनेके निश्चित	
पुनः स्वर्गारोहण '''	2355	विचारका प्रतिपादन करते हुए तमरकके	DUBE
१२३-स्वर्गलोकमें ययातिका स्थागतः यदातिके		रूपकका वर्णन करना १४२-भगवान् ऑक्ट्रणका कर्यते गण्डक्याकी	1111
पृछनेपर बद्याजीका अभिमानको ही पतनका		निश्चित विजयका प्रतिपादन	2850
कारण बताना तथा नारदजीका हुयोंधनको		१४३-कर्णके द्वारा पाण्डजॉकी विका और कीरजेंकी	
		पराजय स्थित करनेवाले लक्षणी एवं अपने	
१९४-पृतराष्ट्रके अनुरोधसे भगवान् श्रीकृष्णका		न्वप्रका वर्णन	२४११
		१४४-विदुरकी बात जुनकर बुद्धके भावी दुष्परि-	
१२५-भीष्मः द्रोषः विदुर और धृतराष्ट्रका		णामसे व्यथित हुई कुन्तीका बहुत सीच-	
दुवीधनको शमक्षाना 🗥		विचारके याद कर्णके पात जाना """ १४५-कुन्तीका कर्णको अपना प्रथम पुत्र बताकर	4844
१२६-भीष्म और द्रोणका दुर्वोधनको पुनः समझाना	१३७९	उससे पाण्डवपक्षमें भिक्र वानेक अनुरोध	2720
१२७-बीकुणको दुर्योधनका उत्तरः उत्तका पण्डलें-	1053.69	१४६-कर्णका कुन्तीको उत्तर तथा अर्जुनको छोदकर	
को राज्य न देनेका निश्चय 🧢 🚟 🚧	8360	शेष चारी पाण्डवीको न मारनेकी प्रतिका ""	2446
१२८-अक्रिध्यका दुर्योधनको पटकारना और उत्ते		१४७-युधिष्ठिरके पूछनेपर श्रीकृष्यका कौरव-छश्रमें	
कुमित होकर सभासे जाते देल उते कैंद		व्यक्त किये हुए भीष्मजीके क्यन हुनाना	eşx9
करनेकी सलाह देना '''	5565	१४८-होणाचार्यः पिदुर तथा गाल्यारीके मुखिनुक	
१२९-४ृत्यपूका गल्यारीको बुलामा और उसका		एवं महत्त्वपूर्ण बचनोका भगवान् औनुज्यके	
दुर्योधनको सम्माना '''	२३८५	द्वारा अधन	२४१३

१४९-वृत्रोधनके प्रति भृतराष्ट्रके युक्तिसंगत वचन- याण्यकोको आधा राज्य देनेके लिये आदेश*** २४३६	१६४-पाण्डवसेनाका युद्धके मैदानमें जाना और भृष्टयुक्षके द्वारा योद्धाओंकी अपने-अपने योग्य
१५० अहिलाका कीरवींके प्रति सामः दान और	विपक्षियोंके शाथ मुद्ध करनेके लिये नियुक्ति २४७८
भेदनीतिके प्रयोगकी असफाउता यताकर	(रधातिरधसंक्यानपर्ध)
दण्डके प्रयोगपर ओर देना "" २४३८	१६५-दुर्योधनके प्रस्तेपर भीध्यका कीरवरश्रके
( सैन्बनिर्याणपर्व )	रिवर्षी और अतिरिवर्षेका परिचय देना " २४७९
१५१-पाण्डक्पक्षके सेन्सपतिका चुनाव तथा	१६६-कौरवपश्चके रथियोंका परिचय " २४८१
पाव्यवसेनाका कुरुक्षेत्रमें प्रवेश *** २४३९	१६७-कौरवपक्षके रथी। महारथी और
१५२-कुरुकेशमें पाण्डबकेनाका प्रश्नाव सया	अतिराधियोंका वर्णन ''' २४८३
शिविर-विमाण ''' २४४४	१६८-कीरसपक्षके रिथमी और अतिरिधयोका
१५६-दुर्पोधनका सेनाको बुधिवत होने और	वर्णनः कर्ण और भीष्मका रोपपूर्वक
विकिर निर्माण करनेके छिये आजा देना	संबाद तथा हुर्योधनहारा उसका मिवारण *** २४८५
सथा सैनिकॉकी रजवात्राके लिये हैयारी २४४५	१६९-पाण्डसपक्षके रथी आदिका एवं उनकी
१५४-सुचित्रिका भगवान् श्रीकृष्णसे अपने	सहिमाका वर्णन *** २४८८
सम्बोचिक कर्तन्त्रके विषयमें प्रस्ताः	१७०-पाण्डवफाके रथियों और महाराधियोंका
भगवान्का युद्धको ही कर्तव्य वताना तया इस	वर्णन तथा विराट और हुपदकी प्रशंसा *** २४८९
निषयमें बुश्चिक्टिका संताप और अर्जुनद्वारा	१७१-मण्डवपञ्चके रथी। महारयी एवं अतिरथी
भीकृष्यके वचनीका समर्थन "" २४४७	आदिका वर्णन *** *** २४९०
१५५-दुर्योधनके द्वारा केनाऑका विभाजन और	१७२-भीष्मका पाण्डवपश्चके अतिर्थी बीरोंका
प्रथक्षक् अश्रीहिनियोंके सेनापतियोंका	वर्णन करते हुए शिलण्डी और पाण्डवीका
अभिषेक ''' २४४९	वथ न करनेका कथन "" १४९२
१५६-वुर्योधनके द्वारा भीष्मजीका प्रधान-सेनायतिके	( अम्बोपाच्यानपर्व )
<b>पदपर अभिनेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर</b>	१७१-अम्बोपाल्यानका आरम्भ-भोष्यत्रीके द्वारा
विविद-निर्माण २४५१	काशिराजकी कन्याओंका अपहरण "" २४९३
१५७ सुभिन्तिरके द्वार। अपने सेनापतियोका	
अभियेकः यदुविभयोगहित बल्समजीका	१७४-अम्बाका शाल्यराजके प्रति अनुसम प्रकट
आसमन तया पाण्डवींसे विदा छेकर	करके उनके पास जानेके किये भीष्मसं
उनका तीर्थयात्राके स्त्रिये प्रस्थान ''' १४५४	आजा मॉननः *** २४९५ १७५-अन्वाका द्याल्वके यहाँ जाना और उससे
१५८-स्व्योका वहायता देनेके लिये आनाः परंतु	
व्यापन और कीया की में कार्रिक का	परित्यक्त होकर तरसोंके आश्रममें भानाः
कोरा उत्तर पाकर और जाता ''' २४५६ १५६-पुतराह और संजयका संदाद ''' २४५६	वहाँ रीसावत्य और अभ्याका संबाद "" २४९५
१५९-पुतराष्ट्र और संजयका संबाद " १४५९	र अध्-तानसाक आभाम राजाय शत्रवाहन आर
( उल्क्ट्तागमनपर्व )	व्यक्तवस्था जासम्बद्ध तथा द्वारा अभ्यक्ता
१६०-दुर्योधनका उल्हको दूत बनाकर पाण्डवीके	वासमीत " र४९८
पास भेजना और उनसे कहनेके लिये संदेश हेना २४६०	and the second of the second o
१६१-पाण्डवींके शिविसमें पहुँचकर उल्कका भरा	बातचीत *** २५०२ १७८-अम्बा और परशुरामजीका संबद्धः
सभामें दुर्वोधनका संदेश सुनाना *** २४६८	
<b>१६२-पाण्डनपश्चको</b> ओरसे दुर्योधनको उसके	
ECTION COME AND STREET STREET	रोपपूर्व बातचीत तथा उन दोनोका युदक
१६३-गाँचा पाण्यमाः विराटः हुपदः शिलग्दी	लिये कुरुक्षेत्रमें उतरना "" १५०४
और पृष्टपुत्रका संदेश लेकर उल्कका शौरना	१७९-वंकस्पनिर्मित रथपर आसद परशुरामजीके
अपेर प्रकार वर्ष कर दिल्ला लाइना	साथ भीष्मका शुद्ध पारम्भ करना "" २५१०
न्यार वाद्यका नाव श्रुपकर हुमाभनका	१८०-शीष्म और परश्चरामका घोर युद्ध २५१३
ज्याका सुक्क स्थ्य तथार हान्छ।	१८१-भीष्म और पश्चरामका युद्ध २५१५
आदेख देजा ः स्थल्	१८२-भीमा और परश्रुरामका युद्ध *** १५१६

१८२-भीष्मको अष्टबसुओंसे प्रस्तापनास्त्रकी प्राप्ति २५१८ १८४-भीष्म तथा परशुरामजीका एक दूसरेपर शक्ति और ब्रह्मास्त्रका प्रयोग	१९०-हिरण्यवमांके आक्रमणके भयते वक्ताचे हुए दुपदका अपनी महाराजीते संकटनिवारणका उपाय पूछना *** "" १५२९
१८५-देवताओंके मना करनेसे भीभाका प्रसापना- स्नको प्रयोगमें न लागा तथा पितरः देवता और गङ्गाके आग्रहसे भीभा और	१९१-बुपदपत्नीका उत्तरः बुपदके द्वारा नगरस्थाकी व्यवस्था और देवाराधन तथा शिलाण्डिनीका वनमें जाकर स्थूणाकर्ष नामक वक्कते अपने
परश्रुरामके युद्धकी समाप्ति *** २५२० १८६—माम्पाकी कठोर तपस्या *** २५२३ १८७—अम्बाका द्वितीय जन्ममें पुनः तप करना	दुःखनिवारणके छिये प्रार्थना करना "" २५३० १९२-विखण्डीको पुरुषत्वकी प्राप्तिः दुषर् और
और महादेवजीते अभीध बरकी प्राप्ति तथा उसका विताकी आगर्मे प्रवेश *** २५२५	हिरण्यवर्गाकी प्रसन्नताः स्वृणाकर्णको कुनेरका साप स्था भीष्मका शिखण्डीको न मारनेका निभय *** १५३२
१८८-अम्बाका राजा तुपदके वहाँ कम्बाके रूपमें जन्मः शजा तथा शनीका उत्ते पुत्ररूपमें प्रसिद्ध करके उसका नाम शिखण्डी रखना *** २५३६	१९३-तुर्योधनके पूछनेपर श्रीष्म आदिके द्वारा अपनी-अपनी हाक्तिका वर्णन *** २५३७
१८९-शिलण्डीका विवाह तथा उसके स्त्री होनेका समाचार पाकर उसके श्रगुर दशर्णराजका	१९४-अर्जुनके द्वारा अपनी। अपने सहायकीकी तथा युधिष्ठिरकी भी शक्तिका परिचय देना २५३८ १९५-कीरबसेनाका रणके लिये प्रस्थान *** २५३९
सहान् कीप · · · २५२८	१९६-शण्डवसेनाका बुद्धके खिये प्रस्तान *** १५४१
चित्र-र	भूची
( रंगीन ) र-निसटकी शजसभामें भीकृष्णका	१६-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय फाण्डचीका संदेश सुना रहे हैं *** *** ३२१६ १४-भीमसेनका बल क्सानते हुए

( रंगीन )		१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय फाण्यवीका	100
१-विराटकी शाजसभामें भीकृष्णका		संदेश सुना रहे 🕻 🎌	4544
र सिर्वाहर । ११० ·	*** 2.43	१४भीमरोनका यल बस्तानते हुए	
२-संजयकी श्रीकृष्ण एवं पाण्यचीते भेंट	₹036	भृतराष्ट्रका विलाप	5564
२-द्रीपदीका श्रीकृष्णते सुते केशोंकी		१५-भृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत	5544
बात बाद रखनेका अनुरोध	5545	१६-अञ्चिष्णका कौरव-सभामें प्रवेश	5550
४-इस्टिनापुरके मार्गमें ऋषियोंका	,	१७—गोमाता सुरभि	5556
आकर शीकृष्णसे मिसना '''	*** 2550	t८-भगवान् विष्णुके द्वारा वस्कृका	
५-कीरक्सभामें विराट् रूप '''	6525	गर्मनाश	4466
		<b>१९—ययातिका स्वर्गारीहण</b> ***	*** \$ \$000
(सादा)		२०-दुर्योधनको ग्रन्थारीकी धटकार	5556
६-डुर्योधन और अर्जुनका अक्रिणाने युद	क	२१भगवान् श्रीकृष्ण कर्णकी समझा रहे हैं	5x5#
लिये सहायता गाँगनाः '''	30 do	२२-याग्डवॉके डेरेमें बखरामवी	5844
<del>७ नहुपका सर्वते प्तन '''</del>	3060	२३पाण्डबोंकी विशाल छेना ""	5x0C
८-आकाशचारी भगवान् सूर्यदेव	*** 8505	२४-भीष्म-दुर्वीधन-धंबाद	SACO
९-बिदुर और पृतसमू ***	*** 4556	२५-वाण्डव-वेनापति भृष्टसुम् '''	6840
te-प्रहादबीका न्याव · · ·	*** 5684	२६-भीष्म और परधरामके मुद्रमें नारदबी-	- 00.11
११-आत्रेय मुनि और साध्यगण	*** 5844	हारा बीच-वचाय	*** 6464
१२-भीसनत्सुवात और महाराजभूतराष्ट्र	\$\$#\$	२७-( ६० छाइन चित्र फरमोंमें )	

die.

## भीष्मपर्व

<b>अपन्या</b> थ	विचय	पृत्त-सं स्था	aterital	विश्वम	पुष-संस्थ	
	( जम्बूखण्डविनिर्माणपर्व			चियोंका <b>युद्धके</b> लिये आने		
	उभव पश्चके सैनिकोंकी स्थिति			व्यूइः धाइन और भ्वज		
	थमीका निर्माण					
	त्रीके हारा संजयको दिन्य			का कोल्पहरू स्या		
	। भक्तूचक उत्पातीका वर्णन			क्षेत्र 😶		
	हे द्वारा समङ्गलस्थक उत्पात			गके विषयमें युभिष्ठिर और अर्जुनद्वारा वज्रव्यूहकी		
	क लक्षणीका वर्णन			अध्यक्षतामें वेमाचा अ		
४-मृतराष्ट्रके	क्रुक्तेपर संजयके द्वारा	भूमिके		नाओं की स्थित दया की		
	वर्णन ***			844		
५-पद्ममहार	ह्तौ तथा सुदर्शनद्वीपका	संधिस		को देखकर युभिश्विरक		
			करना औ	र अक्टियाकी कुमस्ते ।	ही विजय	
	वर्षः पर्वतः सेक्सिरिः स			यह कहकर अर्जुन		
	प्राकृतिका वर्णन *** हुरुः भद्राधावर्षं तथा मास्य			देना '''		
	Bes attended that and			रमयात्राः अर्धुम धीर		
	हिरण्यकः श्रुष्टवान् पर्वत			स भीकृष्णका अर्जुनचे की हेपे कहना '''		
	र्घेका वर्णन			व्य कर्ना इसा हुर्गादेवीकी स्तुतिः		
	की नदियों। देखीं तथा ज			नहत दुर्गासन्तके गठर		
	र भूमिका माइल			हर्ष और उत्साहके विषयः		
	र्मि बुर्गोके अनुसार मनुष्पेत			का संवाद "		
तथा गुण	र्णोका निरूपण 🗥	5484				
	( सूमिपर्व )		२५-( आमन	ह्रगवद्गीतायां त्रथमोऽ	व्यायः )	
११-बाकक्री	पका वर्णन	2450		नाऑके प्रभान-प्रभान व		
१२-कुकाः व	होक और पुष्कर आदि द्वीपीप	तं संया		हा वर्णन तथा सक्जनक्थ		
_	तुर्व एवं चन्द्रमाके प्रमाणक		भयभीत ह	हुए अर्जुनका विषाद	5640	
	( अभिव्भगवद्गीतापर्व )		२६-( भीमर	हुगचद्गीतायां द्वितीयोऽ	ध्यायः )	
			अर्जुनको	युद्धके लिये उत्साहित	इस्ते हुए	
	। युद्धभूमिसे छीटकर धू		भगवान्के	द्वारा नित्यानित्य वस्तुके	विवेचन-	
	मृत्युका समाचार सुनाना		पूर्वक सा	ख्ययोगः कर्मयोग एवं वि	रेपतप्रश्रकी	
	का विकाप करते हुए भ		स्मिति औ	र महिमाका प्रतिपादन	··· 24 = 5	
	मनेकी पटनाको विसारपूर्वक		२७-( भ्रीमन	इगवडीतायां तृतीयोऽ	ष्यायः )	
	जयसे प्रश्न करना			और कर्मयोग आदि समस्		
	र युक्के क्लान्तका वर्णम —दुर्योभनका दुःशासनको			कर्तव्य कर्म करनेकी आव		
	—दुशायका दुश्याचनका स्रिये समुचित स्थवस्था करनेका			एवं स्वध्मेपालनकी मा		
	त्का उद्वापत व्यवस्था करणका नकी सेनाका वर्णन			युव स्वयम्पादनका ना भक्ते उपादका वर्णन		
4.4 2 31.44	t me make het aledal	7.76.9	the state of the	A ter off at the late of the l	1717	

४४-कौरव-पाण्डवीके प्रथम दिनके बुद्धका आरम्भ १८२१

४५-उमयपक्षके सैनिकॉका दृग्द-बुद

\*\*\* १८१३

२८-( भ्रीमञ्जगवद्गीतायां चतुर्घोऽध्यायः )	१६-( अमिक्रगणहीतायां द्वादशोऽध्यायः )
सगुण अगवान्के प्रभावः निष्काम कर्मयोगः तथा योगी महातम पुच्योके आवरण और राजकी महिमाका वर्णन करते हुए निविध यक्षां एवं शानकी महिमाका वर्णन " २६२३ २९-( श्रीमञ्ज्यवद्गीतायां पश्चमोऽध्यायः ) सांख्ययोगः निष्काम कर्मयोगः शानयोगः एवं भक्तिसहित ध्यानयोगका वर्णन " २६३६	साबार और निराकारके उपासकीकी उत्तमता- का निर्णय तथा भगवत्यामिके उपासका एवं भगवत्यामिवाले पुरुषोंके कक्षणीका वर्णन " २७२७ २७-( श्रीमङ्गावद्गीतायां वयोदशोऽज्यायः) सानसहित क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ और बक्रति-पुरुषका वर्णन " २७३९
१०-( श्रीसङ्गबद्गीतायां वद्दोऽध्यायः ) निष्कास कर्मयोगका प्रतिपद्दन करते हुए आत्मोद्दारके क्रिये प्रश्ना तथा मनोनिमहपूर्वक ध्यानयोग एवं योगभ्रष्टकी गतिका वर्णन "" २६४५	३८-( श्रीमञ्ज्ञ संबद्गीतायां चतुर्वशोऽध्यायः )  हानकी महिमा और धक्ती-पुक्षके कमत्की उत्पत्तिकाः संखः रजः तम—तीनी गुणीकाः भगवत्प्राप्तिके उपायका एवं गुणतीत पुक्षके लक्षणीका वर्णन
३१-( श्रीमङ्गबद्गीतायां स्तामोऽण्यायः ) ज्ञान-विश्वानः भगवान्ती व्यापकताः अन्य देवतःओंकी जपासना एवं भगवान्की प्रभाव- सद्धित न जानवेवार्लेकी निन्दा और जानने- वार्लेकी महिमाका कथन "" २६५८	३९( श्रीमञ्ज्ञराधद्वीतायां पञ्चव्योऽण्यायः )  संगरवृक्षकाः भगवव्याप्तिके उपायकाः जीवारमान्तः प्रभावमहित परमेश्वरके खरूपका एवं धरः शक्षर और पुरुषोत्तमके तत्वका वर्णन २७६२
३२-( श्रीमद्भगवद्गीतायामध्मोऽध्यायः ) ब्रह्मः अध्यात्म और कर्मादिके विपयमें अर्जुनके सात प्रान और जनका उत्तर एवं भक्तियोग तथा शुक्क और कृष्ण मार्गोका प्रतिपादन *** २६६५	४०-( श्रीमञ्जरावद्गीतायां शोहकोऽण्यायः ) प्रत्यतिहत देवी और आसुरी सम्प्राच्य वर्णन तथा शास्त्रविपरीत आचरणींभी त्यागने और
३२-( श्रीसद्भगवद्गीतायां नयमोऽण्यायः ) शनः विद्यन और जयत्की उत्पत्तिकाः आसुरी और देवी सम्पदावालीकाः प्रभावसहित भगवान्- के खलपकाः सङ्गाम-निष्काम उपासनाका एवं भगवद्-भक्तिकी महिमाका वर्णन	द्रासको अनुक्ष आचरण करनेके क्षिये प्रेरणा २७६९ ४१-( श्रीमक्रगमद्रीतायां समदकोऽज्यायः ) श्रद्धाका और शास्त्रविष्यीत धेर तप करनेवासीका वर्षनः आहारः यशः तप और दानके प्रयक्-पृथक् भेद तथा ॐ, तत्ः सत्के प्रयोगकी व्याक्ता २७७५
१४-( श्रीमक् गवहीतायां दशमोऽश्यायः ) भगवान्की विभूति और योगशक्तिका तथा प्रभावनहित भक्तियोगका कथनः अर्जुनके पूछनेपर भगवान्द्वारा अपनी विभृतियोका और योगशक्तिका पुनः वर्णन *** २६९१	ार-( श्रीमञ्ज्ञगबद्गीतायामद्यादशोऽध्यायः )  त्यागकाः सांख्यसिद्धान्तकाः पत्रसदित वर्णः धर्मकाः उपासनासहित शाननियाकाः अक्तिसदित निष्काम कर्मयोगका एवं गीताके माहात्यका
३५-( श्रीमद्भगवद्गीतायामेकाद्भोऽभ्यायः ) विश्वरूपका दर्शन करानेके क्षिये अर्जुनकी प्रार्थनाः भगवान् और संजयद्वारा विश्वरूपका वर्णनः अर्जुनद्वारा भगवान्के विश्वरूपका देखा जानः भयभीत हुए अर्जुनदारा भगवान्की	वर्णन १९९४ ( भीष्मवभएषी) ४६—गीताका माहात्म्य तथा युधिहिरका भीष्मः होषः कृप और शल्यले अनुमति केकर कुक्के
स्तुति-प्रार्थनाः भगवान्द्रारा विश्वरूप और	लिये तैयार होना ***

चतुर्भुजरूपके दर्शनकी महिमा और केवल

अनन्यभक्तिसे ही भगवान्की प्राप्तिका कथन २७०८

प्रश्निक तथा अभिमन्युका भयंकर युढा हारा उजर्द्धभारका वर और रिलेका पर्वाक्ष वर	४६-सौरव-पाण्डवसेनाका प्रमासान युद्धः *** २८२८	६५धृतराष्ट्र-संजय-संबादके प्रसङ्घमं दुर्गोधनके द्वारा
श्रुवको हारा उचरकुमास्का वथ और स्टेन्स्व (पारुम		AND THE PROPERTY OF THE PROPER
१८-१२ व्यक्ति सहस्य पराप्तम और भीमके द्वारा उठका वथ १८१६ १८-१ सुक्ष्म अहम व्यक्ति समानि १८१६ १८-१ सुक्ष्म अहम व्यक्ति समानि १८८६ १८-भीमके अहम वया द्वारा अविकास पराप्तम और भीमके व्यव्द स्वर्की समानि १८८६ १८-भीमके अहम वया द्वारा व्यक्ति विद्या समानि अहम वया होनी दक्षि १८८६ १८-भीमके अहम वया द्वारा अविकास अहम वया द्वारा अहम वया व्वारा अहम वया द्वारा अहम वया द्वारा अहम वया व्वारा अहम वया द्वारा अहम वया व्वारा अहम वया द्वारा अहम वया द्वारा अहम वया द्वारा अहम वया द्वारा अहम वया व्वारा अहम वया व्वारा अहम वया द्वारा अहम वया व्वारा अहम वया व्वारा अहम वया द्वारा अहम वया व्वारा अहम वया द्वारा अहम वया व्वारा व्वारा अहम वया द्वारा अहम वया व्वारा व्वारा अहम वया व्वारा व्वारा अहम वया व्वारा व्वारा व्वारा अहम वया व्वारा व्वारा अहम वया व्वारा व्वारा अहम वया व्वारा व्		
प्रथ—र नेतन्का महाभयंकर पराक्रम और भीम्मके ह्राय उठका तथ	खेतका पराक्रम	
द्वारा उत्तक विश्व "		
प्रश्-चाक्का युद, भीप्मक प्रवण्ड पराक्रम तथा प्रथम दिनके बुद्ध की श्रमादि  '' २८४३  'ए-प्रिणिविरक्षे किना, भगवान् श्रीकृणवृद्धारा आधासन, प्रशुक्ष किने क्रीकारण युद्धका निर्माण रिक्के युद्धके किने क्रीकारण युद्धका निर्माण र्थ देनके युद्धको किने क्रीकारण युद्धका निर्माण र्थ देनके युद्धको स्थाप देनके युद्धका यु		
प्रथम दिनके बुद्धकी समाप्ति  प		
<ul> <li>५०-मुिशियरको चिन्ताः भगवान् अहिरणद्वाराः आधारमः भूष्टक्षका उत्पाद तथा दितिय दितके युद्धके लिये कोद्याचण व्यूह्का तिमाण २८६६ ५१-कौरस-देनाकी व्यूह्-एचना तथा योनी दलींम १८५० ५१-भीम्म और अर्जुनका युद्ध १८५० ५१-भीम्म और अर्जुनका युद्ध १८५० ५१-भीम्म और अर्जुनका युद्ध १८५० ५१-भीम्म अर्थेर अर्जुनका युद्ध १८५० ५१-भीम्मेनेको किरा व्यक्त स्व प्राव्यक्त युद्ध १८५० ५१-भीम्मेनेको किरा विवादीचे युद्धः भीम्मेनेको केद्या व्यक्त्येक अर्थे १८५० भीम्मेनेको केद्या व्यक्त्येक अर्थे १८५० भीम्मेनेको केद्या व्यक्त्येक भातुमान् और अर्जुनका पराक्रम तथा वृत्तरे वेतिको विवादी १८०० भीम्मेनेको वृद्धका अर्थे भातुमान् और अर्जुनका पराक्रम तथा वृत्तरे वेतिको वृद्धका अर्थे भातुमान् युद्ध १८५० ५६-भीम्मेन्य व्यव्ध युद्धका अर्थे १८५० ५६-भीम्मेन्य और अर्जुनका पराक्रम तथा वृत्तरे १८५० ५६-भीम्मेन्य और अर्जुनका पराक्रम केदा १८०० भीम्मेनेको वृद्धका अर्थे भात्यक्ष भात्यक्ष भात्यक्ष १८०० भीम्मेनेको वृद्ध युद्धका अर्थे १८०० भीम्मेनेको वृद्ध युद्धका अर्थे भाव्यक्ष पराक्रम केदा १८०० ५६-भीम्मेनेको वृद्ध युद्धका अर्थे भाव्यक्ष पराक्रम केदा १८०० भीम्मेनेको वृद्ध युद्धका अर्थे भाव्यक्ष पराक्रम केदा परा्यव्यक्ष पराक्रम और अर्जुनका पराक्रम विवाद १८०० ६०-भीमेनेको वृद्ध युद्धका पराक्रम केदा परा्यव्यक्ष पराक्रम अर्थे १८०० भीम्मेनेको वृद्ध युद्धका पराक्रम केदा परा्यव्यक्ष पराक्रम और अर्जुनका पराक्रम केदा पराव्यक्ष युद्धका पराच्यक विवादी भाव्यक पराक्रम केदा पराव्यक केदा युद्धका विवादी भाव्यक पराच्यक विवादी भाव्यक पराच्यक विवादी भाव्यक पराच्यक पराच्यक विवादी भाव्यक पराच्यक पराच्यक विवादी भाव्यक पराच्यक प</li></ul>		क्य महत्ता *** २९१५
स्वक सुबक लिय काँखारण व्यूहका निर्माण २८४६  ५१-कीरब-तेनाकी व्यूह-रचना तथा दोनों दलोंमें  शक्क मिन काँर निह्नाद  ५८५०  ५२-भीष्म और अर्जुनका युद्ध  २८५०  ५४-भीष्म केंद्र तथा द्रोणाचार्यक युद्ध  ५४-भीष्में केंद्र या कार्यक भीत्राचार और केंद्र मात्र या उनके युद्धक केंद्र तथा द्रोक केंद्र मात्र या उनके युद्धक केंद्र तथा द्रोक केंद्र मात्र या उनके युद्धक केंद्र तथा व्याद्धक केंद्र या उनके युद्धक व्याद्धक केंद्र या व्याद्धक केंद्र या व्याद्धक केंद्र या उनके युद्धक केंद्र या उनके व्याद्धक केंद्र या उनके युद्धक केंद्र वा व्याद्धक केंद्र या केंद्र वा व्याद्धक केंद्र या केंद्र वा केंद्र वेता केंद्र या केंद्र वा केंद्र वेता केंद्र या केंद्र या केंद्र वेता केंद्र या केंद्र या केंद्र वेता केंद्र या केंद्र या केंद्र या केंद्र वेता केंद्र या केंद्र वेता केंद्र या केंद्र या केंद्र वेता केंद्र या वा केंद्र या केंद्र	५० -युधिश्चिरकी चिन्ताः भगवान् श्रीकृष्णद्वारा	
पश्-कीरब-वेनाश्ची व्यूह-रचना तथा दोनों दलीवें राष्ट्रक्षित और सिंहनाव २८५० १२-भीष्म और अर्जुनका युद्ध २८५२ १२-भृष्ट्युम तथा द्रोगाचार्यका युद्ध १२-भृष्ट्युम तथा द्रागाचार्यका युद्ध १२-भृष्ट्युम तथा प्राव्ध १२-भृष्ट्युम तथा व्याव्ध १२-भृष्ट्युम तथा प्राव्ध १२-भृष्ट्युम तथा प्राव्ध १२-भृष्ट्युम तथा व्याव्ध १२-भृष्य १२-भृष्ट्युम तथा व्याव्ध १२-भृष्ट्यय १२-भृष्यय १२-भृष्ट्यय १२-भृष्यय १०-भृष्यय		
श्रुष्ट्राची और सिंहनाद  १८५०  १२-भीष्म और अर्जुनका युद्ध  १८५७  १२-भूष्ट्रयुम तथा द्रोगाचार्यका युद्ध  १८५७  १४-भीमतेनका कियाँ और नियादींचे युद्ध, भीमतेनको किया उनके बहुतन्चे मेनिकोंका संह्रार उनके बहुतन्चे मेनिकोंका संह्रार  १८५७  १५-भीमतेन अर्थ अभिमत्यु और अर्जुनका पराक्रम तथा वृत्तरे दिनके युद्धको समानि  १८६७  १६-भीमतेन और भूरिअवाका युद्ध, भूरिअवको युद्ध, भूरिअवको युद्ध, भूरिअवाका युद्ध, भूरिअवाका युद्ध, भूरिअवाका युद्ध, भूरिअवाका युद्ध, भूरिअवाका युद्ध, भूरिअववक्ष, भूरिअवविक्य, भूरिअवव्द्य, भूरिअवव्य, भूरिअवव्य, भूरिअवव्य,	दिनके युक्के लिये कौद्यावण व्यूहका निर्माण २८४६	
५२-भीम्य और अर्जुनका युद्ध  ५२-भीम्य और अर्जुनका युद्ध  ५८५२  ५२-भूष्टयुम तया द्रोगाचार्यका युद्ध  ५८५२  ५८-भीम्येनको द्वारा राज्यके अर्जुनका पराक्रम तथा दूलरे विनक्षेत्रका लेखार  ५८५२  ५८-भीम्यनयु और अर्जुनका पराक्रम तथा दूलरे विनके युद्धका लागामा  १८५५  ५८-भीम्यनयु और अर्जुनका पराक्रम तथा दूलरे विनके युद्धका लागामा  १८५५  ५८-भीम्यनको होत्य राज्यका स्मानान युद्ध  ५८-पण्डवन्विरिक्षम पराक्रम जीरवन्तेनामें भगदद्ध  तथा युद्धका अरामम भीम्यको  मारमेके क्षिये उचल होनाः अर्जुनका पराक्रम भीभको  मारमेके क्षिये उचल होनाः अर्जुनका पराक्रम स्माना  १८७७  १८-भीम्यनको द्वारा करिक्सेनाको पराज्यः  स्वार्म प्रिक्सेनाको पराक्रम अर्थक्षको पराज्यः  स्वार्म भीम्यनको होत्य दुर्योभनको पराज्यः  स्वार्म भीम्यनको होत्य दुर्योभनको पराज्यः  स्वार्म भीम्यनको होत्य स्वार्म और अर्जुनका द्वारा  १८७७  १८-भीम्यनको द्वारा करिक्सेनाको पराज्यः  स्वार्म भीम्यनको होत्य स्वार्म भीम्यनको पराज्यः  स्वार्म भीम्यनको होत्य स्वार्म भीम्यनको पराज्यः  स्वार्म भीम्यनको होत्य स्वार्म भीम्यनको अर्थाभानन तथा शार्वो  १८०७  १८-भीम्यारम त्रुप्वे  १८००  १८००  १८-भीम्यारम त्रुप्वे  १८००  १८	५१-कीरव-सेनाक्षी व्यूह-रचना तथा दोनों दलोंमें	
१३- पृष्ठयुम्भ तथा द्रोगाचार्यका युद्ध ११- भीमछेनको कवियों और निपादिं युद्धः भीमछेनके द्वारा शक्रदेवः भातुमान् और केंद्रमान्का वध तथा उनके बहुतने केंनिकोंका संदार १८५९ १५- भीमछेनको क्रारा शक्रदेवः भातुमान् और केंद्रमान्का वध तथा उनके बहुतने केंनिकोंका संदार १८५९ १५- भीमछेनको क्रारा श्राय अर्थुनका पराक्रम तथा बूलरे दिनकें युद्धका अरारभः पण्डब तथा तथा युद्धका आराभः पण्डब तथा तथा युद्धका आराभः पण्डब तथा तथा युद्धका आराभः पण्डब तथा तथा युद्धका अरारभः पण्डब तथा तथा युद्धका वित्रव व्यव्धका वित्रव व्यव्धका वित्रव व्यव्धका वित्रव व्यव्धका वित्रव व्यव्धका व्यव्यव्धका व्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव	शङ्काष्ट्रनि और सिंहनाद " २८५०	
प्रभ-भीमिनेनका किलों और निवादीं युद्धः, भीमनेनका किलों और निवादीं युद्धः, भीमनेनके किलों के तथा अनिमन्यु और क्ष्युम्बादारा का तथा युद्धः विकार व्याप्त विकार के तथा अनिमन्यु और क्ष्युम्बादारा का तथा अनिमन्यु और क्ष्युम्बादारा का तथा अनिमन्यु और अर्थुनका पराक्रम तथा दूलरे विकार युद्धका अरम्भः पाष्ट्रक तथा विवार किलों के तथा प्राव्धक के तथा अनिमन्यु और अर्थुनका पराक्रम तथा दूलरे विकार युद्धका अरम्भः पाष्ट्रक तथा विवार के तथा अर्थिमान्य के तथा अर्थिमान्य के तथा अर्थुमान्य विवार के तथा अर्थिमान्य के तथा अर्थिमान्य के तथा अर्थुमान्य विवार के तथा अर्थुमान्य विवार के तथा विवार के तथा अर्थुमान्य विवार के तथा विवार के तथा अर्थुमान्य के तथा विवार के त	५२-भीष्य और अर्जुनका युद " २८५२	
भीमस्तेनके द्वारा राकरेव, भातुमान् और केंद्रमान्का वाच तथा उनके बहुतन्ते निक्केंका संहार अर्थनका पराक्रम तथा दूलरे दिनके युद्धका अरम्भः पाण्डब तथा उनके बहुतन्ते तिकेंका संहार अर्थनका पराक्रम तथा दूलरे दिनके युद्धका अरम्भः पाण्डब तथा तैर विक्के युद्धका तथा राज्य तथा तैर विक्के युद्धका तथा राज्य तथा तथा तिर विक्के युद्धका तथा राज्य तथा	५३-५ष्टयुम् तथा द्रोणाचार्यका युद्ध *** २८५७	
भीमस्तेनके द्वारा शक्कदेव, भातुमान् और केतुमाल्का वध तथा उनके बहुत-धे नित्कोंका संहार	५४भीमछेनका कलिंगों और निपादोंसे युद्धः	भागसन तथा आभगन्यु जार सहरूपक
सेतनकोंका संदार २८५९ ५५-अभिमन्यु और अर्जुनका पराक्रम तथा दूलरे दिनके युद्धको समानि २८६७ ५६-तिवरे दिन — कौरव-पाण्डवोंकी च्यूह-स्वाता तथा युद्धको आरम्भ २८६७ ५६-तिवरे दिन — कौरव-पाण्डवोंकी च्यूह-स्वाता तथा युद्धको आरम्भ २८६७ ५८-पाण्डवन्वीरिका पराक्रम, कौरव-सेनामें भगदद तथा युद्धको आरम्भ २८७१ ५८-पाण्डवन्वीरिका पराक्रम, कीरव-सेनामें भगदद तथा युर्योधन और भीम्मका संवाद २८७४ ५८-भोमसेन केद्वारा दुर्योधनको पराक्रम, अधिक्रमका भीमको मारनेके किये उचन होना, अर्जुनको प्रतिक्रा और उनके द्वारा कौरवसेनाको पराज्य, तृतीय दिवनके युद्धकी समानि २८७४ ६०-चौर्य दिवनके युद्धकी समानि २८७४ ६०-चौर्य दिवन चौनों केनाओंका च्यूहनिमाण तथा भीम्म और अर्जुनका दैरथ-युद्ध २८८८ ६१-अभिमन्युका पराक्रम और पृष्टयुक्षद्वारा द्वारको प्रतिक युद्धकी समानि २८७४ ६१-अभिमन्युका पराक्रम और पृष्टयुक्षद्वारा द्वारको प्रतिक युद्धकी समानि २८५१ ६१-अभिमन्युका पराक्रम और पृष्टयुक्षद्वारा द्वारको प्रतिक युद्धकी समानि २८५१ ६१-अभिमन्युका पराक्रम और पृष्टयुक्षद्वारा द्वारको प्रतिक द्वारा कौरवनिक द्वारा गलनेनाका संहार २८९१ ६१-अभिमन्युका पराक्रम और पृष्टयुक्षद्वारा द्वारको प्रतिक द्वारा भागवनके द्वारा गलनेनाका संहार २८९१ ६१-अभिमन्युका पराक्रम और प्रत्मकारी भीमसेनका भागवनके द्वारा प्रतिक द्वारा गलनेनाका संहार २८९१ ६१-अधिकाकी युठभेव २८९१ ६१-भीमकेत कोर प्रतिक द्वारा आरक्षम्यामाका भागवनके द्वारा प्रतिक द्वारा आरक्षम्यक्षम्य पराज्य, पृर्वारको वारा प्रतिक द्वारा भागवनके द्वारा आरक्षम्यको पराज्य, भगदक्षको प्रतिक द्वारा आरक्षम्यको पराज्य, भगदक्षको प्रतिक द्वारा आरक्षम्यको पराज्य, भगदक्षको द्वारा प्रतिक द्वारा भगदक्षको द्वारा आरक्यक्षमा पराज्य, भगदक्षको प्रतिक द्वारा भगदक्षको पराज्य, भगदक्षको द्वारा प्रतिक द्वारा भगदक्षको पराज्य, भगदक्षको प्रतिक द्वाराक्षको पराज्य,		
५६-अभिमन्यु और अर्जुनका पराक्रम तथा वृत्तरे दिनके युद्धको सारामा पाण्डक तथा कैरक्के युद्धको सारामा पाण्डक तथा वृद्धको सारामा पाण्डक तथा युद्धको सारामा पाण्डक तथा युद्धको सारामा युद्ध '२८७१ ७६-भृतराष्ट्रको चिन्ता '' २९३१ ७८-भौमवेनके द्वारा दुर्वोधनको पराक्रम अधिकान्यु पराक्रम अधिकान्यु पराक्रम अधिकान्यु भौर द्वापा कृरे विन्ते युद्धको सारामा '' २९४२ ७९-भौमवेनके द्वारा दुर्वोधनको पराक्रम अधिकान्यु भौर द्वापा कृरे विन्ते युद्धको सारामा '' २९४३ विन्ते युद्धको सारामा सारामा '' २९४३ विन्ते युद्धको सारामा मारामा पराक्रम अधिकान्यु युद्धको सारामा '' २९४७ विन्ते युद्धको सारामा '' २९४७ विन्ते युद्धको सारामा मारामा पराक्रम अधिकान्यु युद्धको सारामा '' २९४७ विन्ते युद्धको सारामा '' २९४७ विन्ते युद्धको सारामा मारामा पराक्रम अधिकान्यु युद्धको सारामा पराक्रम पराक्रम अधिकान्यु युद्धको सारामा '' २९४७ विन्ते युद्धको सारामा अधिकान्यु युद्धकान्यु युद्धको सारामा पराक्रम पराक्रम अधिकान्यु युद्धको सारामा पराक्रम पराक्रम भारामा पराक्रम पराक्रम पराक्रम भारामा पराक्रम पराक्रम भारामा पराक्रम पराक्रम भारामा पराक्रम पराक्रम पराक्रम भारामा पराक्रम भारामा पराक्रम भारामा पराक्रम भारामा पराक्रम पराक्रम भारामा पराक्रम पराक्रम भारामा पराक्रम भारामा पराक्रम पराक्रम भारामा पराक्रम	केतुमान्का वध तया उनके बहुत-से	
प्र-अभिमान्तु आर अजुनका पराक्रम तथा दूसरे दिनके युद्धका आरम्भा पाण्ड्य तथा कीरवर्धनाका क्रमदाः मकरक्यूह एवं की अञ्च्यूह वनाकर युद्धमें प्रदुक्त आरम्भ '' २८६७ धर्मामसेन युद्धमें प्रदुक्त आरम्भ '' २८५० धर्मामसेन युद्धमें प्रदुक्त आरम्भ कीरवर्सनामें भगदइ तथा तुर्योधन और भीरमका संवाद '' २८७४ धर्मामसेन युद्धमें प्रदाक्त पराक्रम कीरवर्सनामें भगदइ तथा तुर्योधन और भीरमका संवाद '' २८७४ धर्मामसेन के हारा तुर्योधन कीर भीरमका संवाद '' २८७४ धर्मामसेन के हारा तुर्योधन की रामामन युद्धमें स्वाय प्रतीम स्वाय स्वय स्वय कीरवर्सनाम पराक्रम अधिमान्यु और द्रीपर्यापुन्नेक हारा तुर्योधन की पराक्रम अधिमान्यु और द्रीपर्यापुन्नेक हारा तुर्योधन की याधासन तथा सात्वे युद्धकों स्वया भीरम और अर्जुनको प्रतिमाण तथा भीरम और अर्जुनको द्रीरय-युद्ध '' २८४८ दर-अभिमान्युका पराक्रम और प्रमुद्धमें द्रीप पराक्रम और प्रमुद्धमें सार्य भावद्ध द्रीपाचार्य और वित्राटका युद्ध वित्रके युद्ध की कीरवर्सनाका प्रस्थान '' २९४७ दर-अभिमान्युका पराक्रम और प्रमुद्धमें हारा प्रत्य कीरवर्सनाम प्रस्थान '' २८४८ दर-अभिमान्युका पराक्रम और प्रमुद्धमें द्रीर पराक्रम और अर्थुनको द्रीर वित्रक द्रीर कीरवर्सनाम वित्रक द्रीर पराक्रम और अर्थुनको द्रारा प्रत्य कीरवर्सनाम वित्रक द्रीर अर्थुनको द्रारा प्रत्य कीरवर्सनाम वित्रक प्रमुद्धमें के सार्य भावद्ध द्रीप्ति पराक्रम पराक्रम स्वर्ध पराक्रम कीरवर्सनाम वित्रक प्रत्य कीरवर्सनाम वित्रक द्रीर अर्थुनको द्रारा प्रत्य कीरवर्सनाम वित्रक प्रदूष्ट वित्रक वित्रक वित्रवर्ध पराक्रम कीरवर्सन क	मैनिकीका संहार ''' २८५९	
दिनके युद्धकी समाप्ति '' २८६७ कीरविस्ताका क्रमहाः मकरव्यृह एवं कीश्वव्यृह वनाकर दिन —कीरव-पाण्डवींकी व्यृह-रवना तथा युद्धका आरम्भ '' २८७१ '५८-पाण्डवन्वीरींका प्रसानान युद्ध '' २८७१ '५८-पाण्डवन्वीरींका प्रसानान युद्ध '' २८७१ '५८-पाण्डवन्वीरींका प्रसानान युद्ध '' २८७१ '५८-पाण्डवन्वीरींका पराक्रम, कीरव-सेनार्ने भगदङ्ग तथा दुर्योधन्य और भीष्मका संवार '' २८७४ '५८-भीष्मका पराक्रम, अक्रिक्शका भीष्मको सारमेके क्षिये उचार होनाः अर्जुनको प्रताना पराक्रम, अक्रिक्शका भीष्मको सारमेके क्षिये उचार होनाः अर्जुनको पराज्यः एतीय दिवनके युद्धकी समाप्ति '' २८७७ 'दिनके युद्धकी समाप्ति '' २९४७ 'दिनके युद्धकी कीरवन्ति युद्धमी कीरवन्ति प्रसानि '' २९४७ 'दिनके युद्धमी कीरवन्ति प्रसानि '' २९४७ 'दिनके युद्धकी समाप्ति '' २९४७ 'दिनके युद्धमी कीरवन्ति प्रसानि '' २९४७ 'दिनके युद्धमी कीरवन्ति प्रसानि '' २९४७ 'दिनके युद्धमी कीरवन्ति प्रसानि '' २९४७ 'दिनके युद्धमी कीरवन्ति '' २९४७ 'दिनके युद्धमी कीरवन्ति द्वारा प्रसानि '' २९५२ 'दिनके युद्धसी प्रसानि '' २९५२ 'दिनके	५५-अभिमन्यु और अर्जुनका पराक्रम तथा दूसरे	
प्र- नीसर दिन — करिन पाण्डविकी व्यूह-रचना तथा बुद्धका आरम्भ ''' १८७० ५६-जुतराष्ट्रकी चिन्सा ''' १९३१ ५८-पाण्डवन्निर्देश पराक्रम, कीरवन्सेनाम भगदद्द तथा दुर्गोधन और भीष्मका संवाद '' ५८-पाण्डवन्निर्देश पराक्रम, कीरवन्सेनाम भगदद्द तथा दुर्गोधन और भीष्मका संवाद '' ५८-भीष्मका पराक्रम, अक्टिल्लका भीष्मको मारनेके लिये उचत होना, अर्जुनका पराजय, सुतीय दिनके बुद्धकी समाति '' ६०-चौध दिन — दोनों भेनाओंका व्यूहिमाण तथा भीष्म और अर्जुनका दैरथ-युद्ध '' ६१-भीष्मस्युका पराजय और पृष्ट्युमद्वारा व्यक्ति सेनाओंका व्यूहिमाण तथा भीष्म और अर्जुनका दैरथ-युद्ध '' ६१-भीष्मस्युका पराजय और पृष्ट्युमद्वारा व्यक्ति भीष्मके द्वारा करिवनेनाको पराजय सेनाओंका युद्ध तथा भोष्मके द्वारा गजनेनाका संहार 'र८९१ ६१-पुष्ट्युम्म और शत्य आदि दोनों पञ्चके दीरोंका युद्ध तथा भोष्मकेन द्वारा गजनेनाका संहार 'र८९१ ६१-पुष्ट्युम्म भीर शत्य आदि दोनों पञ्चके दीरोंका युद्ध तथा भोष्मकेन द्वारा गजनेनाका संहार 'र८९१ ६१-पुष्ट्युम्म भीर अर्जुनका द्वारा गजनेनाका संहार 'र८९१ ६१-पुष्ट्युम्म भीर वाल्य पराज्यका पराजय, भाष्मके खाथ युद्ध तथा सार्थिक और भूरिक्रवाकी युद्ध तथा सार्थिक और भूरिक्रवाकी युद्ध तथा सार्थिक और भारवन्नि द्वारा विन्द और अर्थुविन्दकी पराजय,		
प्रश्निक आरम्भ १८७० १६-बृतराष्ट्रकी चिन्ता '' २९३३ १८७१ १८-पाण्डक वीरोंका प्रमाना युढ '' २८७१ १८-पाण्डक वीरोंका प्रमाना युढ '' २८७४ १८-पाण्डक वीरोंका पराक्रम, कीरव सेनामें भगदइ तथा दुर्योधन और भीष्मका संवाद '' २८७४ १८-भीममेनके द्वारा दुर्योधनकी पराक्रम, अधिकणका भीष्मको मारनेके किये उच्चत होना। अर्थुनकी प्रतिया युढ तथा छटे दिनके युढ की समानि '' २९४३ १८०७ दिनके युढ की समानि '' २९४३ १८०० दिनके युढ की समानि '' २९४७ १८०० दिनके युढ की समानि '' २९४७ १८०० दिनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० दिनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० दिनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० दिनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० दिनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० दिनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० दिनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० दिनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० दिनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० विनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० दिनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० विनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० विनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० विनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० विनके युढ के विराट प्राच कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० विनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० विनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान कीरवसेनाका प्रसान '' २९४७ १८०० विनके युढ के किये कीरवसेनाका प्रसान कीरवसेनाका प्रसान कीरवसेनाका प्रसान कीरवसेनाका प्रसान कीरवसेनाका प्रसान कीरवसेनाका प्रयान कीरवसेनाका प्रसान कीरवसेनाका प्रस		
५८-अभयपश्चकी सेनाओंका यमानान युढ	तथा युद्धका आरम्भ *** १८७०	७६-पतराष्ट्रकी चिन्ता ''' २९३३
५८-पण्डबन्धीरींका पराक्रमः कीरब-संगार्म भगदङ् तथा दुर्योधन और भीष्मका संवादः '' ५८७४ ७९-भीममेनके द्वारा दुर्योधनको पराक्रमः अभिमन्यु भौर उनके द्वारा कीरबरेनाको पराजयः स्तीय दिवनके द्वारा कीरबरेनाको प्रसानः ' २९४७ ६०-वीय दिवनके द्वारा कार्यक्रके कीरविका प्रसानः ' २९४७ ६०-वीय दिवनके द्वारा कार्यक्रके द्वारा संवर्ष रूपक्रके विवर्ष निर्माण्य कीर विवर्षका द्वारा संवर्ष रूपक्रके द्वारा अलम्बुपकी पराजवः प्रवासको प्रतानको द्वारा प्रकारको प्रावसका प्रावसका प्रसानः कीरबर्या भीयस्तिन भीष्मके साथ पुद्ध तथा सारविक और भूरिक्रवाची प्रतेकचका प्रसानः, कीरबाँकी ६८९७ ६८९७ ६८०-भीष्मद्वाचा दुर्योधनको संवर्ष सामानः ' २९४७ ८०-भीष्मद्वाचा दुर्योधनको सामानः ' २९४७ १८०-भीष्मद्वाचा दुर्योधनको सामानः ' २९४७ पर-भामस्त्वचे सामानः सामानः ' २९४० पर-भामस्त्वचे सामानः सामानः सामानः ' २९४० पर-भामस्त्वचे सामानः सामानः सामानः सामानः सामानः ' २९४० पर-भामस्त्वचे सामानः सामा	५७-उभयपक्षकी सेनाऑका प्रमानान युद्ध 😬 २८७१	
तथा तथा तथा स्थाप्त संवाद '' २८७४  ५९-भीष्मका पराक्रमः श्रीकृष्णका भीष्मको मारनेके छिपे उचल होनाः अर्जुनको प्रतिशा मुद्र तथा करे दिनके युद्ध से समानि '' २९४३  ५०-भीष्मद्वारा दुर्योधनको थाशासन तथा शातवें दिनके युद्ध से समानि '' २९४७  ६०-वीषे दिन-दोनों सेनाओंका व्यूहर्तिमांण तथा भीष्म और अर्जुनका हैरथ-युद्ध '' २८८८  ६०-भीष्मद्वारा दुर्योधनको आशासन तथा शातवें दिनके युद्ध से कौरव-पाण्यक सेनाओंका तथा भीष्म और अर्जुनका हैरथ-युद्ध '' २८८८  ६१-अभिष्मस्युका पराक्रम और धृष्टयुम्गद्वारा सक्ति प्रतिशासन्य भीर श्रीत स्थाप्त संदर्ध २९४९  ६१-अभिष्मस्युका पराक्रम और धृष्टयुम्गद्वारा स्थाप '' २८९१  ६२-पृष्टयुम्ग और राज्य आदि दोनों पक्षके वीरोंका युद्ध तथा भीमसेनका संहार २८९२  ६२-पुष्टयुम्ग और राज्य आदि दोनों पक्षके वीरोंका युद्ध तथा भीमसेनका भीष्मके साथ युद्ध तथा मारविक और भुरवाक्रमका युद्ध '' २९५२  ६२-पुष्टयुम के द्वारा तथा मारविक और भूरवाक्रमका युद्ध तथा मारविक और भूरवाक्रमका युद्ध '' २९५२  ६२-भीष्मकेन और पदोत्कवका पराक्रमः कौरवाक्रम भीरवाक्रमका हार तथा भीमसेन और कृतवन्दकी पराजयः भूरवाक्रमका हार तथा मारवाक्रम भारवाक्रमका युद्ध '' २९५२  ६४-भीष्मकेन और पदोत्कवका पराक्रमः कौरवाक्रम भारवाक्रमका हार तथा मारवाक्रमका हार तथा मारवाक्रमका हार तथा मारवाक्रमका व्यूहक्त क्षार विन्द और अनुविन्दकी पराजयः भारवाक्रमका हारना तथा महराजयर	५८पण्डक-वरिषेका पराक्रमः कीरव-सेनामें भगदङ्	
प्र-भीष्मका पराक्रमः अक्षिणका भीष्मको मारनेके छिये उचन होनाः अर्जुनकी प्रतिज्ञा मुद्ध तथा छटे दिनके युद्धकी समानि " २९४३ विनके युद्धकी समानि " २९४७ दिनके युद्धकी छिये कौरवसेनाका प्रस्थान " २९४७ दिनके युद्धमें कौरवस्ताका प्रस्थान " २९४७ दिनके युद्धकी छिये कौरवसेनाका प्रस्थान " २९४७ दिनके युद्धमें कौरवस्ताका प्रस्थान " २९४१ दिनके युद्धमें कौरवस्ताका प्रस्थान विद्यान को प्रस्थान को युद्ध तथा भीमसेनका प्रस्थानकी युद्धमें द्वारा अलम्बुपकी पराजवः प्रयुक्षके द्वारा युद्धमें द्वारा अलम्बुपकी पराजवः प्रयुक्षके द्वारा युद्धमें द्वारा अलम्बुपकी पराजवः प्रयुक्षके द्वारा युद्धमें द्वारा अलम्बुपकी पराजवः प्रदूक्ष व्यारा युद्धमें द्वारा व्याराविक्तको प्रस्थान विद्यान को प्रस्थान विद्यान को प्रस्थान विद्यान को प्रस्थान को युद्ध " २९५२ द्वारान के द्वारा विद्यान और अनुविन्दकी पराजवः भ्रायसकी प्रदेशकाका प्रायसकी प्रदेशकाका प्रस्थान को प्रस्थान को प्रस्थान को द्वारा विद्यान की प्रस्थान को प्रस्थान को प्रस्थान के द्वारा विद्यान की प्रायसकी प्रदेशकाका प्रस्थान को प्रस्थान के द्वारा विद्यान की प्रस्थान के द्वारा विद्यान की प्रस्थान की प्रस्थान की प्रस्थान की प्रायसकी प्रदेशकाका विद्यान की प्रस्थान	तथा दुर्योधन और भीष्मका संवाद ''' २८७४	
भारनेके किये उचन होनाः अर्जुनकी प्रतिशा और उनके द्वारा कीरबसेनाको पराजयः तृतीय दिवनके द्वारा कीरबसेनाको पराजयः दिनके द्वारा केरियकेनाका प्रसान *** २९४७  ६०—दीधे दिन—दोनों सेनाओंका व्यूहनिर्माण तथा भीष्म और अर्जुनको हैरथ-युद्ध *** २८८८  ६१—आभिमन्युका पराकम और भृष्टयुम्गद्धारा शक्के पुत्रका वथ *** २८८८  ६१—अभिमन्युका पराकम और भृष्टयुम्गद्धारा शक्के पुत्रका वथ *** २८९१  ६२—पृष्टयुम्ग और शस्य आदि दोनों पक्षके वीरोंका युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार २८९३  ६२—पुष्टयुम्ग और शस्य आदि दोनों पक्षके वीरोंका युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार २८९३  ६२—पुद्धसन्यमें मचण्ड पराकमकारी भीमसेनका भीष्मके साथ पुद्ध तथा मारयिक और भूरभवाकी युद्धभेद *** २९५२  ६१—भीमसेन और पदोत्कचका पराकमः कीरबीकी  प्राप्त के द्वारा किर्ने प्रसावयः भीष्मके साथ पुद्ध तथा मारयिक और भीर कृतवर्माका युद्ध *** २९५२  ८१—इरावान्के द्वारा विन्द और अनुविन्दकी पराजयः भगवरक्ते प्रदानयक इराना तथा महराजयर	५९-भीष्मका पराक्रमः अक्रिश्यका भीष्मको	और द्रौपदीपुत्रोंका धृतराष्ट्रपुत्रोंके साय
भीर उनके द्वारा कीरबसेनाकी पराजयः तृतीय दिवनके युद्धकी बनाति  र्राण्य दिवनके युद्धकी बनाति  र्राण्य दिवनके युद्धकी बनाति  र्राण्य दिवनके युद्धकी बनाति  र्राण्य दिवनके युद्धकी किये कीरबसेनाका प्रस्तान '' २९४७  र्राण्य मण्डल और व्यक्षक्य स्थानका प्रस्तान '' २९४७  र्राण्य मण्डल और व्यक्षक्य स्थानका संद्र्य २९४९  र्राण्य मण्डल और व्यक्षक्य स्थानका संद्र्य २९४९  र्राण्य और अर्जुनके डरकर कीरवन्तेनामें  श्रालके पुत्रका वथ '' २८९१  र्राण्य और अर्जुनके डरकर कीरवन्तेनामें  श्रालके पुत्रका वथ '' २८९१  र्राण्य और अर्जुनके डरकर कीरवन्तेनामें  श्रालके पुत्रका वथ '' २८९१  र्राण्य और अर्जुनके डरकर कीरवन्तेनामें  श्राण और अर्जुनके डरकर कीरवन्तेनामें  श्राण और अर्जुनके डरकर कीरवन्तेनामें  श्राण श्रालको द्राण व्यक्षका प्रस्तानको संद्र्य १८९३  श्राण प्रस्तानको द्राण प्रसानको प्रसानको स्थानको संद्र्य १८९३  श्राण प्रसानको द्राण प्रसानको द्राण प्रसानको स्थानको स्यानको स्थानको स्यानको स्थानको स्यानको स्थानको स्थानको स्थानको स्थानको स्थानको स्थानको स्थानको स्य	मारनेके किये उचन होनाः अर्जुनकी प्रतिश	
<ul> <li>६०—वीधे दिन—दोनों सेनाओंका व्यूहिनमांण तथा भीष्य और अर्जुनका हैरथ-युद्ध ''' २८८८ </li> <li>६१—अभिमन्युका पराक्रम और धृष्टयुद्धद्वारा शक्ते पुत्रका वध ''' २८९१ </li> <li>६२—पृष्टयुद्ध और शस्य आदि दोनों पक्षके वीरोंका युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार २८९३ </li> <li>६२—युद्धस्वलमें अवण्ड पराक्रमकारी भीमसेनका भीष्मके साथ युद्ध तथा सात्यकि और भूरिभवाकी युद्ध स्था सात्यकि और </li> <li>६४—श्राव्यक्तके द्वारा अलम्बुपकी पराजयः पृथ्युक्तके द्वारा वृद्ध तथा भीमसेन भीष्मके साथ युद्ध तथा सात्यकि और </li> <li>६४—श्रावान्तके द्वारा बिन्द और अनुविन्दकी पराजयः भगदस्तके प्रदोत्कचका इतिना तथा महराजपर</li> </ul>	और उनके द्वारा कीरक्सेनाकी पराजयः	
<ul> <li>६०—वीधे दिन—दोनों सेनाओंका व्यूहिनमांण तथा भीष्य और अर्जुनका हैरथ-युद्ध ''' २८८८ </li> <li>६१—अभिमन्युका पराक्रम और धृष्टयुद्धद्वारा शक्ते पुत्रका वध ''' २८९१ </li> <li>६२—पृष्टयुद्ध और शस्य आदि दोनों पक्षके वीरोंका युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार २८९३ </li> <li>६२—युद्धस्वलमें अवण्ड पराक्रमकारी भीमसेनका भीष्मके साथ युद्ध तथा सात्यकि और भूरिभवाकी युद्ध स्था सात्यकि और </li> <li>६४—श्राव्यक्तके द्वारा अलम्बुपकी पराजयः पृथ्युक्तके द्वारा वृद्ध तथा भीमसेन भीष्मके साथ युद्ध तथा सात्यकि और </li> <li>६४—श्रावान्तके द्वारा बिन्द और अनुविन्दकी पराजयः भगदस्तके प्रदोत्कचका इतिना तथा महराजपर</li> </ul>	तृतीय दिवनके मुद्रकी समाप्ति ''' २८७७	दिनके युद्धके लिये कीरवलेनाका प्रस्थान *** २९४७
तथा भीष्म और अर्जुनका दैरथ-युद्ध ''' २८८८  ६१-अभिमन्युका पराक्रम और धृष्ट्युम्नद्वारा शक्ते पुत्रका वथ ''' २८९१  ६२-भृष्ट्युम्न और शत्य आदि दोनी पक्षके बीरींका युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार २८९३  ६२-युद्धस्वल्मे प्रचण्ड पराक्रमकारी भीमसेनका भीष्मके साथ युद्ध तथा मारथिक और भूरिभवाकी युद्ध स्था मारथिक और १८९७  ६४-ध्रावान्के द्वारा बिन्द और अनुविन्दकी पराजय, भारकेन और कृतवर्माका युद्ध । स्था मारथिक और भारकेन द्वारा विन्द और अनुविन्दकी पराजय, भारकेन और व्यावान्के द्वारा बिन्द और अनुविन्दकी पराजय, भारकेन और प्रदेशकेन प्राप्य के हारा विन्द और अनुविन्दकी पराजय,		
६१-अभिमन्युका पराक्रम और धृष्ट्युम्नद्वारा ८१-श्रीकृष्ण और अर्जुनसे डरकर कौरव-सेनामें श्रास्के पुत्रका तथ '' २८९१ भगद्द होणान्यार्थ और तिराहका युद्ध , विराह पुत्र होरा प्राव्य आदि दोनी पश्रके वीरीका पुत्र तथा भोमसेनके द्वारा गजसेनाका संदार २८९३ युद्ध , सात्यिक द्वारा अलम्बुपकी पराज्य , पृथ्युमके द्वारा अलम्बुपकी पराज्य , पृथ्युमके वारा दुर्थीधनकी हार तथा भीमसेन भीष्मके साथ पुद्ध तथा सात्यिक और भर्मका युद्ध ''' २९५२ ५१ स्थानको युद्ध ''' २९५२ ८१-इराबान्के द्वारा बिन्द और अनुविन्दकी पराज्य , भगदस्ते प्रहोत्कनका द्वारा तथा महराज्यर		
शत्मे पुत्रका वध		
६२-भृष्टसुम्न और शस्य आदि दोनी पश्चके बीरीका  युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार २८९३  ६२-युद्धसालमें भ्रचण्ड पराक्रमकारी भीमसेनका  भीष्मके साथ सुद्ध तथा लात्यकि और  भूरिशवाकी मुठभेड ''' २८९७  ६४-ध्रावान्के द्वारा बिन्द और अनुविन्दकी पराजयः  भगदस्ते प्रटोत्कचका पराक्रमः कीरबीकी  भगदस्ते प्रटोत्कचका हारना तथा महराजपर		-
युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार २८९३ युद्धः सात्मिकके द्वारा अलम्बुपकी पराजयः १.३-युद्धस्थलमे अचण्ड पराक्रमकारी भीमसेनका भूष्ट्युप्तके द्वारा दुर्थोधनकी हार तथा भीमसेन भीष्मके साथ युद्ध तथा सात्यकि और भीर कृतवर्माका युद्धः " २९५२ भूरिभवाकी युद्धाः " २९५२ ८३-इराबान्के द्वारा बिन्द और अनुविन्दकी पराजयः भयदस्ते प्रदोत्कचका पराक्रमः कीरबीकी भगदस्ते प्रदोत्कचका हारना तथा महराजपर		
६२-युद्धसल्में मचण्ड पराक्रमकारी भीमसेनका भूष्युम्नके द्वारा तुर्योधनकी हार तथा भीमसेन भीष्मके साथ युद्ध तथा सारयकि और भीर भीर कृतवर्माका युद्ध " " २९५२ भूरिभवाकी मुद्रभेद " " २८९७ ८३-इरावान्के द्वारा विन्द और अनुविन्दकी पराजय, भगदस्ते भ्रटोत्कचका द्वारा तथा मद्रराजपर		
भीष्मके साथ पुद्ध तथा सात्यकि और अौर कृतवर्माका युद्ध *** २९५२ भूरिभवाकी युद्ध क्षेत्र *** १८९७ ८३-इरावान्के द्वारा विन्द और अनुविन्दकी प्राजय, भगदस्ते प्रदोत्कचका प्राजम, कौरवाकी भगदस्ते प्रदोत्कचका हारना तथा महराजपर		
भूरिश्रवाकी मुद्रभेद ः २८९७ ८३-इरावान्के द्वारा विन्द और अनुविन्दकी प्रशाबयः, ६४-भीमसेन और घटोत्कचका प्रशासनः कीरवीकी भगदस्तते घटोत्कचका हारना तथा महराजपर		
६४-भी <b>मतेन और</b> घटोत्कचका प्रशंकमः <b>कीरवीकी</b> भगदस्ते घटोत्कचका हारना तथा महराजपर		
	पराजव तथा चौथे दिनके युद्धकी समाप्ति''' २९००	नकुल और सहदेवकी विजय २९५६

८४-वृधिहिरसे राजा जुतासुका परात्रित होना। युद्धमें चेकितान और कृपाचार्यका मूर्छित होना।	९७—दुर्योधनका अपने मन्त्रियोंचे सताह करके भीष्य- ते पाण्डवीको मारने अथमा कर्णको शुक्के किये
भृरिभवासे पृष्टकेतुका और अभिमन्युरे चित्रसेन	आका देनेका अनुरोध करना " ३००७
आदिका पराजित होना एकं कुशर्मा आदिसे	९८-शिध्सका दुर्योभनको अर्थुनका पराक्रम बताना
अर्धुनका युद्धारस्थ *** २९६०	और भयंकर मुद्रके स्थि प्रतिका करना तथा
८५-अर्जुनका पराक्रमः पाण्डवीका भीष्मपर आक्रमणः सुधिष्ठिरका शिलण्डीको उपासम्भ	प्रातःकाक दुर्योधनके द्वारा भीष्मकी रक्षाकी
और भीयका पुरुषार्थ ''' ''' २९६४	स्वक्ता १००९ ९९—वर्वे दिनके बुद्धके क्रिये उभवपसकी सेनाओं-
८६-भीष्म और वुधिष्ठिरका युद्धः पृष्टयुक्त और संस्थिकिके साथ बिन्द और अनुविन्दका	की व्यूइरचना और उनके पमातान इक्स
संगामः द्रोण आदिका पराक्रम और सातर्वे	आरम्भ तथा विनाशसूचक उत्पातीका वर्णन ३०१३
दिनके युद्धकी समाप्ति "" १९६८	१००-द्रीसदीके पाँचों पुत्रों और अभिमन्युका सकस अक्रमुखंदे साथ धीर युक्त एवं अभिमन्युके
८७-आठवें दिन व्यूहवद कौरव-पाण्डच-छेनाओंकी	बारा नह होती हुई कीरबचेनाका बुद्रभूमिचे
रणयात्रा और उनका परस्पर धमासान युद्ध २९७२ ८८-भीष्यका पराक्रमः भीमसेनके द्वारा पृत्तराङ्गके	पक्सथन *** १०१५
आठ पुत्रीका वथ तथा दुर्योभन और भीष्मकी	१०१-मभिमम्बुके हारा व्यक्तम्बुधकी पराजकः अर्जुनके तथि भीष्मका तथा कृतकार्यः
पुद्धविषयक शताबीत ''' १९७४ ८९-कोरक-राज्यब-रोनाका धमाशान पुद्ध और	अश्वत्यामा और होनाचार्यके साथ नात्यक्रिक
भवायक अनस्ति ५८००	हुद ''' '' १०१८ १०२—होजाचार्य और सुधमंत्रे ताब अर्धुनका
९४-इराबान्के द्वारा सकुनिके भाइयोंका तथा राज्य	नुद्ध तथा भीमतेनके द्वारा गमतेनाका संहार ३०११
अलम्बुक्के द्वारा इरावान्का वथ "" १९८०	१०३-उभम पक्षकी क्षेत्राओंका पमालन युद्ध और
९१-घटोत्कच और दुर्योधनका भयानक सुद्रः १९८५	रक्तमबी रजनदीका वर्णन *** ३०२४
९२-पटोत्कचका दुर्योधन एवं होण आदि प्रमुख	१०४-वर्जुनके द्वारा त्रिगलौंकी परावक औरक
दिरोंके साथ भयंकर सुद्ध "" २९८७	पाण्यम वैनिकॉका पोर चुक, मिमान्युवे
९३-पटोल्क्यकी रक्षाके किये आये हुए भीम आदि श्रुरविश्वेके ताच कीरवाँका युक्त और उनका	वित्रवेनकीः होणवे हुपदकी जीर शीमवेनवे
पलावन *** १९९०	बाह्यकची पराजय तथा जाश्यकि और श्रीव्य- का युद्ध "" १०२७
९४-हुवोधन और भीमरेनका एवं अश्वरपामा और	१०५—दुर्योधनका दुश्यासनको भीभाकी रजाके
राजा नीसका युद्ध तथा पटोस्कवकी मायाचे मोदित होकर कीरवसेनाका पटायन *** २९९३	क्षिये सादेशः युधिष्टिर और नकुल-कादेक्के
९५-दुर्योधनके अनुरोध और भीष्मजीकी आहारे	द्वारा शकुनिकी शुद्धसमार-चेन्त्रकी परावक तथा शस्यके साथ उन समका गुँद "" ३०३०
भगदत्तका घटोत्कचः भीमसेन और पाण्डस-	१०६-भीष्मके द्वारा पराजित पाण्डक्छेनाका पक्षावन
रोनाके साय पोर युद्ध "" २९९६	और भीष्मको मारनेके सिये उचत हुए
९६-इरावान्के वथसे अर्जुनका युःखपूर्ण उद्गारः श्रीमसेनके द्वारा श्वराष्ट्रके नी पुत्रीका वधः	अक्रिष्णको अर्श्वनका रोकता "" ३०३९
अभिमन्तु और जम्बद्धका युद्धः दुवकी	१०७-त्वे दिनके युदकी समाप्तिः रातमे राज्यकौकी
भयानक स्थितिका वर्णन तथा आठवें दिनके	गुस मन्त्रणा तथा श्रीकृष्णसङ्कितः नाष्यक्रीका
बुद्धका उपसंदार ''' १००१	भीष्मते मिसकर उनके क्षका उपान जनना १०१८

१०८-इसर्वे दिन उभयपद्धकी सेनाका रणके लिये	११६-कौरव-राण्डव-महार्थियोंके द्वन्द्रशुद्धका वर्णन
प्रस्तान तया भीत्म और शिखण्यीका समायम	तथा भीष्मका पराक्रम
एवं अर्जुनका दिलण्डीको भीष्मका वध	११७वभव पशकी सेनाओंका युद्धः दुःशासनन्त्र
करनेके छिये उत्साहित करना "" १०४५	पर्कम तथा अर्जुनके द्वारा भीष्मका
१०९-भीष्य और दुर्योधनका संशद तथा भीष्यके	स्चित्र दीना *** १०७४
द्वारा कालों वैनिकोंका संदार "" ३०४९	११८-भीष्मका अद्भुत पराक्रम करते हुए पाण्डक
११०-बार्चुनके मोत्साइनचे विखण्डीका भीकापर	सेनाका भीषण संहार *** १०७८
आक्रमण और दोनों तेनाओंके प्रमुख बीरोंका	११९-कीरवपसके प्रमुख महारथियोद्धारा सुरक्षित
परस्पर युद्ध तथा बुःशासनका अर्धुनके साथ	होनेपर भी अर्जुनका भीष्मको स्वसे गिरानाः
मीर सुद *** *** १०५१	शरश्चन्यापर स्थित भीष्मके समीप इंस्टब्स-
१११-औरव-गान्यवपक्षके प्रमुख महारियगेंके	भारी शृषिसँका आगमन एवं उनके कथन-
दल्द युद्धका वर्णन *** *** १०५४	से मीम्मका उत्तरायणकी प्रतीखा करते हुए
११२-द्रोणाचर्यका अधस्यामाको अग्रुभ शकुनोंकी	प्राण चारण करना *** १०८२
क्षना देवे हुए उसे भीष्यकी रक्षाके छिये	१२०-भीष्मजीकी महत्ता तया अर्जुनके द्वारा भीष्म-
ब्रास्तुमचे बुद करनेका आदेश देना " ३०५८	को तकिया देना एवं उभव पश्चकी केनाओं-
११६-कीरवपक्षके वस प्रमुख महाराधियोंके साम	का अपने शिविरमें जाना और मीकृष्य-
अचेने कोर पुत्र करते हुए भीमधेनका "	व्यविद्यास्य
अञ्चल पराचन १०६१	१२१-अर्धुनका दिव्य वल प्रकट करके भीष्मजीकी
११४-कीरवपसके प्रमुख महारियोंके साथ पुरुषे	्यात बुसाना तथा भीमाजीका अर्थुनकी
भीम <b>देन और अ</b> र्जुनका <b>मञ्जूत</b> पुरुषार्थं *** ३०६४	प्रशंसा करते हुए दुर्योधनको संभिक्ते किये
११५-भीष्मके बादेशसे युधिष्ठिरका उनपर आक्रमण	समझाना ''' ३०९३
तमा कौरव-पाण्डव-सैनिकॉका श्रीषण मुद्ध ३०६७	१२२-भीष्म और कर्णका रहस्यमय संवाद *** ३०९७

## चित्र-सूची

( तिरंगा )			१०-भक्तोंके हारा प्रेमले दिये हुए पत्र, पुष्प, फळ,			
१-एंजमको दिव्य इष्टि	4 + 1		2444	बस्र आदिको भगवान् प्रस्पन्न प्रक	: होकर	
२-द्रोणाचार्यके प्रति दुर्यो	FF-			<b>प्रह</b> ण करते हैं ***	4.94	2464
कासैन्य प्रदर्शन		**	2450	११—पुण्यात्मा ब्राह्मण सुर्तोहण	444	2545
३-देबताओं और मनुष्योंको			<b>₹२—राजर्षि अम्ब</b> रीय · · ·		२६८९	
अवापतिकी विद्या	771		242×	१३—भगवान्की प्रह्राद आदि सीन		
४-सूर्यके प्रति नारावणकाः	उपटेश		2623	विभ्तियाँ ***		500x
५—समदर्शिता	***		SEAO	१४-भगवान् विष्यु '''	** 4	<b>345</b> 4
				१५-भगवान् श्रीकृष्ण और		
६-एक्में भगवद्-दर्शन	4 4 4		2444	अर्जुनके साथ विजयः		
<del>७ अ</del> र्थायीं भक्त पुष	# to #	4 0 0	1995	विभृतिः मीति और भी	110	2283
<b>८मा</b> र्टभक हीपदी	H 4 H		2442	१६—भीष्मपितामहपर भगवान् श्रीकृष्य-		100)
९-भोमिस्पेकावरं मच	4	4.6.0	3775	की कृपा	***	१८१३